physical . Sc pedagogy

उद्देश्यों के वर्गीकरण का आधुनिक आधार (Present Taxonomy of Behavioural Objectives)

शिक्षकों ने सामान्य उद्देश्यों को वांछित लक्ष्यों के रूप में स्वीकार किया किन्तु इनकी अस्पष्टता ने शिक्षण में इनके प्रयोग में अधिक सहायता नहीं दी। इस दोष को दूर करने के लिये मनोवैज्ञानिकों के एक समूह ने सन् 1948 में मानव व्यवहार के समान तत्त्वों को वर्गीकृत करने के प्रयास किये। संक्षिप्त अनुसन्धान के पश्चात् ही इस समूह ने उद्देश्यों को तीन वर्गों (Domains) में विभक्त किया जो निम्न हैं—

1. ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Domain)

Scanned with CamScanner

2. भावात्मक पक्ष (Affective Domain)

3. क्रियात्मक पक्ष (Conative Domain)

इस समूह ने एक नवीन वर्गीकरण (Taxonomy) का निर्माण किया जिसका आधार 'स्थूल से सूक्ष्म की ओर' (From Concerte to Abstract) तथा 'सरल से कठिन की ओर' (From Simple to Complex) था। B.S.Bloom ने अपने सहयोगियों के साथ शिकागो विश्वविद्यालय में इन तीनों वर्गों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया।

ज्ञानात्मक पक्ष का **ब्लूम** ने 1956 में, भावात्मक पक्ष का **ब्लूम, कर्थवाल** तथा **मसीहा** ने 1964 में तथा क्रियात्मक पक्ष का **सिम्पसन** ने 1963 में वर्गीकरण प्रस्तुत किया।

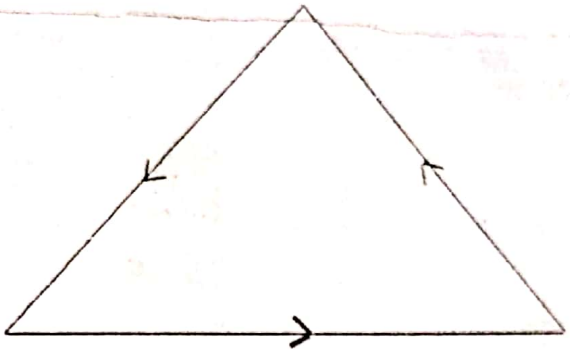

इस वर्गीकरण को निम्न तालिका द्वारा दर्शाया जा सकता है।

शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण

(Taxonomy of Instructional Objective)

ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Aspect)	भावात्मक पक्ष (Affective Aspect)	क्रियात्मक पक्ष (Conative Aspect)
1. ज्ञान (Knowledge)	1. ग्रहण करना (Receiving)	1. उत्तेजना (Impulsion)
2. बोध (Comprehension)	2. प्रतिक्रिया (Response)	2. कार्यवाही (Manipulation)
3. प्रयोग (Application)	3. अनुमूल्यन (Valuing)	3. नियन्त्रण (Control)
4. विश्लेषण (Analysis)	4. विचारना (Conceptualization)	4. समायोजन (Co-ordination)
5. संश्लेषण (Synthesis)	5. व्यवस्थापन (Organization)	5. स्वभावीकरण (Naturalization)
6. मूल्यांकन (Evaluation)	6. चरित्रीकरण (Characterization)	6. आदत या कौशल (Habit or skill)

Scanned with CamScanner

ज्ञानात्मक पक्ष

(Cognitive Domain)

इस पक्ष के अन्तर्गत वे उद्देश्य आते हैं जिनका सम्बन्ध हमारे ज्ञान के पुनः स्मरण, पहचान, बौद्धिक क्षमताओं एवं कौशलों के विकास से होता है। (Objectives dealing with recall or recognition of knowledge and the development of intellectual abilities and skills come under this category)

प्रोफेसर ब्लूम ने इस पक्ष का विवरण निम्न प्रकार दिया है—

1. ज्ञान (Knowledge)
   - परिभाषा
   - प्रत्यास्मरण
   - पहचानना
   - सारणी बनाना
   - छांटना
   - मापन
2. बोध (Comprehension)
   - व्याख्या
   - संकेत
   - चयन
   - निर्णय
   - वर्गीकरण
   - सूत्रीकरण
3. प्रयोग (Application)
   - घोषणा
   - जांचना
   - अनुमान
   - गणना
   - प्रदर्शन
   - प्रयोग
4. विश्लेषण (Analysis)
   - विभाजन
   - तुलना
   - अलग करना
   - आलोचना
   - सारांश
   - विरोध
5. संश्लेषण (Synthesis)
   - तर्क करना
   - विवाद करना
   - निष्कर्ष
   - सम्बन्ध
   - भविष्यवाणी करना
   - सामान्यीकरण
6. मूल्यांकन (Evaluation)
   - निर्णय
   - निर्धारण
   - मूल्यांकन
   - प्रतिवाद करना
   - आक्रमण
   - पहचान

भावात्मक पक्ष

(Affective Domain)

बालक के व्यवहार का भावात्मक पक्ष उसकी रुचियों (Interests), संवेगों (Emotions) तथा मनोवृत्तियों (Attitudes) से सम्बन्धित होता है। (Objectives dealing with changes in

Scanned with CamScanner

interest, attitudes, values, development of appreciations and adequate adjustments come under this category.)

भावात्मक पक्ष की शिक्षा के स्तर निम्न हैं—

1. ग्रहण करना (Receiving) : यह किसी उद्दीपक (Stimulus) की उपस्थिति में संवेदनशीलता से सम्बन्धित है। इसके तीन स्तर हैं—

(1) चेतना (Awareness)

(2) ग्रहण करने की चाह (Willingness to receive)

(3) नियन्त्रित आकर्षण (Controlled or Selected attention)

2. अनुक्रिया (Responding) : यह भावात्मक पक्ष का दूसरा स्तर है। इसके भी तीन स्तर होते हैं—

(1) प्रतिक्रिया में सहमति (Acquiescence in responding)

(2) प्रतिक्रिया की इच्छा (Willingness in responding)

(3) प्रतिक्रिया में सन्तोष (Satisfaction in responding)

3. अनुमूल्यन (Valuing) : इसका सम्बन्ध मूल्यों के प्रति आस्था से होता है। इसके अन्तर्गत विशिष्ट मूल्यों के प्रति स्वीकृति, प्राथमिकता व निष्ठा आती है।

4. धारणा (Conceptualization) : मूल्यों की विविधता के परिणामस्वरूप स्वीकार किये गये मूल्यों के प्रति एक निश्चित धारणा बनाने के लिये प्रत्यय निर्माण (Concept Formation) इसके अन्तर्गत आता है।

5. व्यवस्थापन (Organization) : इसके अन्तर्गत निश्चित किये हुए मूल्यों पर विचार किया जाता है तथा उसको व्यवस्थित रूप दिया जाता है।

6. चरित्र का अंग बनाना (Characterization) : जो भी मूल्य ग्रहण किये जाते हैं उन्हें चरित्र का स्थायी अंग बनाया जाता है।

भावात्मक पक्ष का विवरण इस प्रकार है—

1. आग्रहण (Receiving)
   - (i) सुनना (to listen)
   - (ii) स्वीकारना (to accept)
   - (iii) छाँटना (to select)
   - (iv) ग्रहण करना (to receive)
   - (v) प्रत्यक्षीकरण (to perceive)
   - (vi) चाहना(to prefer)
2. अनुक्रिया (Responding)
   - (i) उत्तर देना (to answer)
   - (ii) विकसित करना (to develop)

Scanned with CamScanner

(iii) सारणीयन (to list)

(iv) छाँटना (to select)

(v) लिखना (to write)

(vi) कथन (to state)

3. अनुमूल्यन (Valuing)

(i) स्वीकारना (to accept)

(ii) पहचानना (to recognise)

(iii) भाग लेना (to participate)

(iv) प्रभावित करना (to influence)

(v) इंगित करना (to indicate)

(vi) निर्णय लेना (to decide)

4. अवधारणा (conceptualization)

(i) विभेदीकरण (to differentiate)

(ii) सम्बन्ध स्थापित करना (to relate)

(iii) विश्लेषण करना (to analyse)

(iv) प्रदर्शित करना (to demonstrate)

(v) इंगित करना (to indicate)

(vi) तुलना करना (to compare)

5. व्यवस्थापन (Organization)

(i) सहसम्बन्ध स्थापित करना (to correlate)

(ii) निर्णय करना (to judge)

(iii) छाँटना (to select)

(iv) संगठित करना (to organise)

(v) ज्ञात करना (to determine)

(vi) बनाना(to form)

6. चरित्रीकरण (Characterization)

(i) पुनरावृत्ति (to revise)

(ii) विकसित करना (to develop)

(iii) परिवर्तन (to change)

(iv) प्रदर्शित करना (to demonstrate)

(v) स्वीकारना (to accept)

(vi) पहचाना (to identify)

Scanned with CamScanner